Part II

Paper – III

मुहम्मद-बिन-तुगलक

मुहम्मद-बिन-तुगलक का वर्तमान मूल्यांकन उसके प्रशासनिक सुधारों एवं परियोजनाओं के विभिन्न पहलुओं के आलोक में किया जाता है। अतः वह अपने समकालीन इतिहासकारों बर्नी और इसामी के लिये पहेली बना रहा। प्रारंभिक साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने, जिनमें वर्सली, हेग, ई.पी. थाम्सन आदि प्रमुख हैं, उसे विविधताओं का सम्मिश्रण, एक विचारहीन व्यक्ति और एक पागल सुल्तान माना है। कुछ भारतीय इतिहासकारों ने भी उसकी चारित्रिक हत्या करने की कोशिश की है। एम. हसन ने उसे एक असफल शासक माना है।

किन्तु अपनी तमाम सीमाओं के बावजूद मुहम्मद-बिन-तुगलक एक विशिष्ट सुल्तान था, जिसमें विलक्षणता एवं कमजोरियाँ दोनों थीं। वह नयी नीतियों के क्रियान्वयन में विश्वास रखता था और उसने आंतरिक एवं विदेशी-दोनों नीतियों में एक प्रकार का नवीनीकरण लाया।

मुहम्मद-बिन-तुगलक के सिंहासनारोहण के बाद उसे एक विशिष्ट प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ा, उसका साम्राज्य विशाल था। अपने इस विशाल साम्राज्य के लिये एक एकीकृत प्रशासनिक प्रणाली की आवश्यकता थी। इसलिये उसने अपने प्रशासनिक नीतियों में रैडिकल परिवर्तन लाया। मुहम्मद-बिन-तुगलक के लिये यह आवश्यक था कि साम्राज्य प्रभावकारी ढंग से नियंत्रित रहे, ताकि विभिन्न क्षेत्रों से भू-राजस्व की राशि का संग्रह संभव हो सके। दूसरी तरफ तकनीकी पिछड़ापन एवम् यातायात और संचार-व्यवस्था की कमियों को देखते हुए एक ऐसे स्थान पर राजधानी का निर्धारण आवश्यक था, जहाँ से सम्पूर्ण साम्राज्य का नियंत्रण संभव हो सके। इसी पृष्ठभूमि में राजधानी-परिवर्तन की घटना का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

मुहम्मद-बिन-तुगलक राजधानी परिवर्त्तित कर दिल्ली से दौलताबाद ले गया। जैसाकि हम जानते हैं कि तुगलक, साम्राज्यवाद के परिप्रेक्ष्य में इसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए। अब साम्राज्य इतना व्यापक हो गया था कि दिल्ली से उसका नियंत्रण किया जाना संभव नहीं था। दूसरे मंगोल आक्रमण के कारण भी दिल्ली असुरक्षित हो गई थी। तीसरे मंगालों की उपस्थिति में पंजाब का आर्थिक महत्व जाता रहा था। चौथे, गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र का पर्याप्त दोहन हो चुका था और अब नये क्षेत्रों का दोहन आवश्यक था। पाँचवे, दक्षिण से नियमित आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिये भी वहाँ निरंतर उपस्थिति आवश्यक थी।

राजधानी-परिवर्तन के औचित्य पर कुछ प्रश्नचिन्ह लगाये गये हैं, क्योंकि इस वजह से दिल्ली और भी असुरक्षित हो गई और फिर उत्तर भारत पर नियंत्रण कमजोर हो गया। कुछ इतिहासकारों ने राजधानी परिवर्तन के अन्य प्रकार के उद्देश्यों को उद्घाटित करने की कोशिश की है। बर्नी का मानना है कि उस समय ऐसे स्थल पर राजधानी बनाना आवश्यक था, जो उत्तर और दक्षिण से सामान्य दूरी पर हो और

Scanned with CamScanner

दौलताबाद इस आवश्यकता को पूरा करता था। यह भी प्रमाणित करने की कोशिश की गई है कि राजधानी-परिवर्तन के द्वारा दिल्ली की जनता को दण्डित करना चाहता था। ऐसा इब्नबतूता का मानना है। किन्तु इब्नबतूता के स्वयं के विचार में भी विरोधाभास है, क्योंकि वह स्वयं यह भी लिखता है कि दौलताबाद की ओर जाने वाले मार्ग पर सराय भी बनवाए गये थे। इसामी ने अपने ग्रंथ 'फतूहाते अल-सलातीन' में की मुहम्मद-बिन-तुगलक इस परियोजना की आलोचना की है। किन्तु इसमें यह भी एक तथ्य है कि इसामी को मुहम्मद-बिन-तुगलक के प्रति व्यक्तिगत रोष भी था।

आधुनिक इतिहासकारों ने यह प्रमाणित करने की कोशिश की है कि प्रभावकारी प्रशासनिक नियंत्रण के लिये मुहम्मद-बिन-तुगलक ने यह कदम उठाया है। गोंन ब्राउन ने लिखा है कि अब गुरूत्व का केन्द्र दिल्ली के बदले दक्षिण हो गया था।

मुख्य आपत्ति इस नीति के क्रियान्वयन पर है। मुहम्मद-बिन-तुगलक के समकालीन इतिहासकार यह प्रमाणित करने की कोशिश करते हैं कि दिल्ली की सम्पूर्ण जनता को दौलताबाद ले जाया गया। किन्तु इस तरह की बात नहीं थी, केवल कुलीनों एवं उच्च वर्गों के लोगों को ही दौलताबाद ले जाया गया। सामान्य जनता अभी भी दिल्ली में ही थी, क्योंकि 1328-29 में दिल्ली से जारी किये दो संस्कृत अभिलेखों से ज्ञात होता है कि अभी भी बहुत बड़ी हिन्दू जनसंख्या दिल्ली में ही निवास करती थी। दूसरे बर्नी यह कहता है कि यह कदम उच्च वर्ग के लोगों के लिये बहुत कष्टकर साबित हुआ। इससे भी यह ज्ञात हुआ कि सिर्फ उच्च वर्ग के लोगों को ही दौलताबाद ले जाया गया था।

मुहम्मद-बिन-तुगलक का दूसरा विवादास्पद कदम सांकेतिक मुद्रा का चलन था। उसने ताम्बे या काँसे की सांकेतिक मुद्रा चलायी। यह विश्व में कोई नई घटना नहीं थी। 1264 ई. में कुबलाई खाँ ने चीन में कागज की मुद्रा जारी की थी। उसी तरह 1295 में फारस का शासक कायखतू ने सांकेतिक मुद्रा जारी की। किन्तु कुबलाई खाँ ने संभावित भ्रष्टाचार को रोकने के लिये कुछ सावधानियाँ बरती थीं। कागज की मुद्रा से सम्बन्धित प्रबंधन बहुत ही गुप्त होता था जो सिर्फ राज्य को ही पता था। इसके अतिरिक्त लेखन में विशेष प्रकार की रोशनाई का प्रयोग किया जाता था। कागज की मुद्रा के साथ-साथ सोने और चाँदी की सामान्य मुद्रा भी चलती रही। वस्तुतः मुहम्मद-बिन-तुगलक ने निम्नलिखित कारणों से प्रेरित होकर सांकेतिक मुद्रा चलाई थी। प्रथमतः 14वीं सदी के प्रारंभ से ही इस्लामी विश्व में चाँदी की बड़ी कमी पड़ गई थी। दूसरे मुहम्मद-बिन-तुगलक ने खुरासान और कराचील अभियान के लिये बहुत बड़ी सेना संगठित की थी। अतः उन सैनिकों को वेतन देने के लिये उसे सुरक्षित सोने और चाँदी का भण्डार चाहिए था। तीसरे संभवतः यह कदम दोआब क्षेत्रों में नये करारोपण की राशि की वसूली के लिये उठाया गया। इन सभी बातों के अतिरिक्त कुछ पाश्चात्य इतिहासकारों ने यह साबित करने की कोशिश की है कि मुहम्मद-बिन-तुगलक ने बुलियन को सुरक्षित रखने के लिये सांकेतिक मुद्रा जारी की।

Scanned with CamScanner

किन्तु मुहम्मद-बिन-तुगलक की यह योजना असफल रही और वह संभवत: इसलिए कि यह योजना समय से आगे की थी। सामान्य जनता इस प्रयोग के साथ अपने को जोड़ नहीं पाई और उसने सांकेतिक मुद्रा स्वीकार करने में दिलचस्पी न दिखाई। दूसरे, सांकेतिक मुद्रा की नकल होने लगी और जैसाकि बर्नी मानता है कि प्रत्येक हिन्दू के घर में टकसाल खुल गया था। अत: बाजार में जाली सिक्कों की भरमार हो गई और अंत में मुहम्मद-बिन-तुगलक को यह योजना वापस लेनी पड़ी। परन्तु इसके दुष्प्रभाव को बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाता है क्योंकि जब 1333 ई. में इब्नबतूता दिल्ली आया था, तो उसने इसका कोई व्यापक दुष्प्रभाव नहीं देखा।

दोआब के करारोपण को बर्नी ने मुहम्मद-बिन-तुगलक का एक क्रूर कदम माना है और इसका व्यापक दुष्प्रभाव पड़ा क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विनाश होने लगा और रैयतों की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई। वस्तुत: मुहम्मद-बिन-तुगलक ने दोआब में कर की राशि को अप्रत्याशित रूप से बढ़ा दिया। यह माना जाता है कि करों की राशि 10 से 20 गुणा बढ़ा दी गई, किन्तु बर्नी उस राशि का सही आकलन प्रस्तुत नहीं करता है। वस्तुत: दोआब के करारोपण का विरोध उन सैनिकों ने भी किया, जो खुरासान और कराचील अभियान के बाद सैनिक सेवा से मुक्त कर दिये गये थे। इसलिये वे सरकार से असंतुष्ट थे। उसी समय सुल्तान ने दोआब क्षेत्र में कृषि की एक नई योजना प्रस्तुत की। दोआब क्षेत्र को विभिन्न विकास-खंडों में बाँट दिया गया और फिर वहाँ प्रगतिशील खेती प्रारंभ की गई। जिसमें नकदी फसलों के उत्पादन पर बल दिया गया, यथा-गेहूँ, गन्ने, अंगूर, खजूर आदि। और इस कृषि कार्यक्रम को पूरा करने के लिये एक पृथक विभाग दीवाने-कोही की स्थापना की गई। किन्तु अधिकारियों के भ्रष्टाचार और अनुभवहीनता के कारण यह योजना भी असफल रही। खुरासान सैनिकों की नकारात्मक भूमिका के कारण भी यह योजना सफल नहीं हो सकी। उसी समय अनावृष्टि और अकाल से भी दोआब का क्षेत्र आक्रान्त हो गया और सबसे बढ़कर सुल्तान ने कृषकों की दशा में सुधार के लिये कोई विशेष प्रयास नहीं किया। अत: उसका दोआब प्रयोग भी इतिहास में एक असफल प्रयोग माना जाता है।

मुहम्मद-बिन-तुगलक का खुरासान-अभियान भी एक असफल योजना मानी जाती है। बर्नी ने खुरासान-अभियान को सुल्तान के द्वारा किये गये अदूरदर्शी कार्यों में एक कार्य माना है। मुहम्मद-बिन-तुगलक ने खुरासान अभियान के लिये एक बहुत बड़ी सेना खड़ी की। उसे अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित किया और 1 वर्ष तक वेतन प्रदान किया। उसके बाद वह सेना भंग कर दी गई। वस्तुत: मुहम्मद-बिन-तुगलक की खुरासान योजना एक महत्वाकांक्षी योजना थी, जिसे दोषपूर्ण नहीं माना जा सकता। मंगोल सरदार तशमासीरीन की हार के बाद मंगोल शक्ति क्षीण पड़ने लगी थी। पश्चिम एशिया में इसके परिणामस्वरूप एक प्रकार का राजनीतिक शून्य उपस्थित हो गया था। संभवत: मुहम्मद-बिन-तुगलक ने इस राजनीतिक शून्य को भरने की कोशिश की या फिर मुहम्मद-बिन-तुगलक भारत के उत्तर-पश्चिम सीमांत को सुरक्षित करना चाहता था,

Scanned with CamScanner

क्योंकि अधिकांश विदेशी आक्रमण इन्हीं क्षेत्रों से होते थे और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसने मिस्र के शाह से एक समझौता किया। किन्तु उसकी यह योजना सफल नहीं हो सकी क्योंकि फारस और मध्य एशिया में राजनीतिक स्थिति तेजी से परिवर्त्तित हो रही थी। अतः मुहम्मद-बिन-तुगलक की खुरासान-योजना भी एक असफल योजना मानी जाती है।

उसी तरह मुहम्मद-बिन-तुगलक का कराचील अभियान भी एक विवादास्पद अभियान है। कुल्लू क्षेत्र और काराजाट की पहाड़ी के, जो भारत और तिब्बत के बीच स्थित है, आसपास के क्षेत्र को कराचील कहा जाता था। यह अभियान भारत की उत्तरी सीमा को सुरक्षित करने के लिये किया गया था। नगरकोट की विजय भी इसी अभियान का हिस्सा थी। एक महत्वपूर्ण सैनिक-भूल के कारण यह योजना भी असफल हो गई। खुसरो-मल्लिक ने, जो सेनानायक था, तिब्बती क्षेत्रों में घुस गया। वह निर्णय उसने सुल्तान की अनुमति के बिना स्वयं लिया था। इस निर्णय का बहुत ही विनाशकारी परिणाम हुआ और माना जाता है कि 10 हजार की सेना में केवल 10 लोग लौटकर वापस आये।

अब प्रश्न यह पैदा होता है कि समकालीन एवं पाश्चात्य इतिहासकारों ने मुहम्मद-बिन-तुगलक की इतनी तीव्र आलोचना क्यों की है? अगर हम समकालीन इतिहासकारों पर नजर डालते हैं तो हमें मालूम होता है कि बर्नी, इब्नबतूता और इसामी तीनों को व्यक्तिगत तौर पर मुहम्मद-बिन-तुगलक से कुछ शिकायतें थीं। बर्नी स्वयं एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। वह मुहम्मद-बिन-तुगलक की उदार धार्मिक नीति से क्षुब्ध था। अतः उसने मुहम्मद-बिन-तुगलक के बारे में कहा है कि सुल्तान सृष्टि के आश्चर्यों में एक है। इब्नबतूता को इस बात का क्षोभ था कि उसे दिल्ली से बाहर कर दिया गया था। उसी तरह इसामी के पितामह के साथ मुहम्मद-बिन-तुगलक ने कोई रियायत नहीं बस्ती थी। मुहम्मद-बिन-तुगलक के विचित्र व्यक्तित्व प्रस्तुत करने में इन इतिहासकारों ने अपनी भूमिका निभाई है।

मुहम्मद-बिन-तुगलक एक प्रगतिशील शासक था। उसने धर्म को राजनीति से पृथक किया और इस तरह उसने एक प्रवृत्ति प्रारंभ की जिसे अकबर ने पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया।

पाश्चात्य इतिहासकारों ने भी मुहम्मद-बिन-तुगलक की बड़ी तीव्र आलोचना की है। ई.पी. थॉमसन का कहना है कि मुहम्मद-बिन-तुगलक के समय हुए अनेक विद्रोहों से यह पता चलता है कि इसकी दोषपूर्ण नीतियों से जनता असंतुष्ट थी। किन्तु यहाँ भी हम देखते हैं कि उन विद्रोहों के लिये केवल उसकी नीतियाँ ही जिम्मेदार नहीं थी, वरन् अन्य कारक भी उत्तरदायी थे। प्रथम वह बहुत कड़ाई से भू-राजस्व की वसूली करवाता था। दूसरे, मुहम्मद-बिन-तुगलक के पास एक शक्तिशाली और संरचनात्मक मशीनरी नहीं थी, जिसकी बदौलत वह अलाउद्दीन की तरह अपनी नीतियों को कड़ाई से लागू करवाता, उसका व्यक्तित्व विरोधों का सम्मिश्रण था। एक तरफ वह अत्यधिक

Scanned with CamScanner

उदार था, दूसरी तरफ, अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को दंडित करने में वह बहुत ही क्रूर था।

किन्तु यह मानना कि समकालीन इतिहासकारों के भेदभावपूर्ण दृष्टि के परिणामस्वरूप ही मुहम्मद-बिन-तुगलक की छवि इतिहास में धूमिल हुई, उचित नहीं है। मुहम्मद-बिन-तुगलक का मूल्यांकन उसकी प्रशासनिक नीतियों एवं कार्यक्रमों के परिप्रेक्ष्य में किया जाना चाहिए। मुहम्मद-बिन-तुगलक की योजननाएँ निश्चय ही प्रगतिशील थीं और बहुत बातों में वैज्ञानिक भी थीं, किन्तु उसमें व्यावहारिक ज्ञान की कमी थी। अत: उनका क्रियान्वयन सफल रूप में नहीं हो सका। इस क्रियान्वयन की असफलता के उत्तरदायित्व से प्राय: मुहम्मद-बिन-तुगलक को इस आधार पर मुक्त किया जाता है कि उसके अधिकारियों और उसकी जनता को इन योजनाओं की पूरी समझ नहीं थी। किन्तु उसके कार्यक्रम की असफलता के लिये केवल यही तथ्य जिम्मेदार नहीं है। यह एक कड़वी सच्चाई है कि मुहम्मद-बिन-तुगलक को इस उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं किया जा सकता। कार्यक्रम बनाने में उसका विभाग बहुत तेजी से कार्य करता था, परन्तु उसे जनता के मनोविज्ञान की समझ नहीं थी और नही उसे परिस्थितियों की विविधता का अंदाजा था। अत: कुल मिलाकर अपनी योजनाओं की असफलता के लिये वह भी बहुत हद तक उत्तरदायी है और उसकी असफलता का कड़वा फल उसके उत्तराधिकारी फिरोज-तुगलक को चखना पड़ा।

****

Scanned with CamScanner

मुहम्मद-बिन-तुगलक के अन्तर्गत राज्य-नीति का नवीनीकरण(New Orientation of State Policy)

मुहम्मद-बिन-तुगलक मध्य भारत के इतिहास में एक विवादास्पद व्यक्तित्व ठहरता है और इसकी वजह है उसके द्वारा किये गये कार्यों की अपरंपरागत प्रकृति उसके समय का महत्वपूर्ण इतिहासकार जियाउद्दीन बर्नी ने मुहम्मद-बिन-तुगलक के व्यक्तित्व के विविध पक्षों का उद्घाटन किया है। किन्तु जैसा कि हबीव और निजामी का मानना है कि बर्नी की राजनीतिक दृष्टि प्रतिक्रियावादी थी और उसकी धार्मिक दृष्टि संकीर्ण थी। अतः उसने उस शासक के व्यक्तित्व उद्घाटन में निष्पक्षता नहीं बरती जो धार्मिक बातों में प्रगतिशील और राजनीतिक बातों में रैडिकल था। अतः मुहम्मद-बिन-तुगलक के व्यक्तित्व के मूल्यांकन में सावधानी बरती जानी चाहिए। उसका व्यक्तित्व उसके विश्वास और कार्यों से पृथक करके नहीं समझा जा सकता है।

मुहम्मद-बिन-तुगलक की नीतियों की नवीनता इस बात में निहित थी कि उसने राज्य को धर्मनिरपेक्ष रूप देने की कोशिश की। वह धार्मिक बातों में बहुत उदार और विवेकशील था। किन्तु हम यहाँ यह भी देखते हैं कि उससे पूर्व अलाउद्दीन खिलजी ने भी धार्मिक नीतियों को राज्य की नीतियों से पृथक करने की कोशिश की थी। मुहम्मद-बिन-तुगलक के समय इन नीतियों को आगे बढ़ाया गया। अतः धार्मिक नीतियों में मुहम्मद-बिन-तुगलक प्रगतिशील था।

नवीनीकरण का दूसरा चरण उसकी उन नीतियों में निहित था, जिसके द्वारा उसने कुलीन वर्ग का आधार व्यापक बनाया। प्रारंभ में केवल तुर्क ही कुलीन वर्ग में शामिल थे। गैर तुर्कों को प्रशासन से बाहर रखा गया था। अलाउद्दीन ने इन नीतियों को उलटे दिया। उसने तुर्कों के अतिरिक्त गैर-तुर्कों को भी कुलीन वर्ग में शामिल किया और इस दृष्टि से देखा जाए, तो अलाउद्दीन खिलजी ने मुहम्मद-बिन-तुगलक की नीतियों का आधार तैयार किया।

मुहम्मद-बिन-तुगलक ने कुलीन वर्ग का आधार और भी व्यापक बना दिया। उसने गैर-तुर्कों के अतिरिक्त भारतीय मुसलमानों एवं हिन्दुओं को भी कुलीन वर्ग में शामिल किया। इस दृष्टि से भी हम देखते हैं कि अलाउद्दीन खिलजी मुहम्मद-बिन-तुगलक का पूर्वगामी था और मुहम्मद-बिन-तुगलक ने खिलजियों की नीति को ही आगे बढ़ाया।

नवीनीकरण का एक पक्ष हमेशा साम्राज्यवादी नीतियों में झलकता है। मुहम्मद-बिन-तुगलक ने दक्कन के उन राज्यों के प्रति, जिन्हें अलाउद्दीन खिलजी ने पराजित किया था, अपनी नीतियाँ परिवर्तित कर दीं। अलाउद्दीन खिलजी ने उत्तर भारत के राज्यों को अपने अधीन कर लिया, किन्तु दक्षिण के राज्यों पर उसने नाममात्र की सम्प्रभुता स्थापित की। मुहम्मद-बिन-तुगलक ने दक्कन के राज्यों को प्रत्यक्षतः साम्राज्य के अधीन कर लिया। इसके अतिरिक्त उसने बंगाल और उड़ीसा पर भी नियंत्रण स्थापित

Scanned with CamScanner

किया। अत: मुहम्मद-बिन-तुगलक का साम्राज्य एक अखिल भारतीय साम्राज्य हो गया। इसलिए राजधानी-परिवर्तन की घटना को तुगलक साम्राज्यवाद के संदर्भ में ही समझा जाना चाहिए।

प्रशासनिक सिद्धांतों के सम्बन्ध में भी हमें एक प्रकार का नवीनीकरण देखने को मिलता है। मुहम्मद-बिन-तुगलक ने प्रशासनिक नीतियों में कई प्रकार के प्रयोग किये। जैसे सांकेतिक मुद्रा दोआब की खेती आदि। किन्तु इस नवीनीकरण की सीमा यह थी कि मुहम्मद-बिन-तुगलक की अवधारणा किताबी अधिक और व्यावहारिक कम थी। इसलिए ये नीतियाँ असफल रहीं।

मुहम्मद-बिन-तुगलक ने बहुत बातों में पुराने दिल्ली सुल्तानों का भी अनुकरण किया। अर्थात् वह परम्परागत ढाँचे को बनाये रखा और जो भी सुधार उसने किये, वे मात्र उपरी सुधार थे। उसके नवीनीकरण की सीमा यह थी कि वह यह समझने में असफल रहा कि किसी भी शासक की सफलता सामान्य जनता के स्वैच्छिक समर्थन पर निर्भर करती है।

प्रशासनिक नीतियों में भी मुहम्मद-बिन-तुगलक ने प्रारंभ के सुल्तानों का ही अनुकरण किया। अर्थात् उसने प्रशासन में गैर-मुस्लिमों एवम् भारतीय मुसलमानों की भागीदारी बढ़ाई। किन्तु यह नीति अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा ही प्रारंभ की जा चुकी थी। वस्तुत: कोई भी शासक, जो एक व्यापक साम्राज्य की स्थापना का लक्ष्य रखता, इसी प्रकार का कदम उठाता, क्योंकि साम्राज्यवादी विस्तार से पूर्व प्रशासन का आधार व्यापक करना आवश्यक होता है।

अंत में हम यह कह सकते हैं कि मुहम्मद-बिन-तुगलक की नीतियों की नवीन स्थिति असफल रही, क्योंकि उसने भारत में मुस्लिम प्रशासन के लिये एक सुस्पष्ट राजत्व का सिद्धांत प्रस्तुत न कर सका। उसके सिद्धांतों में खामियाँ बनी रहीं। आगे उसकी भरपाई अकबर के द्वारा हुई। अपने राज्यकाल के अंतिम दिनों में जब उसके विरुद्ध बहुत सारे विद्रोह हुए, तो उसने मिस्र के खलीफा से शासन करने की सनद प्राप्त की। यह इस बात का द्योतक है कि वह स्वयं भी इस नवीनीकरण के प्रति सुस्पष्ट नहीं था।

****

Scanned with CamScanner